किताब :- द यावान सामरी

भाषा :- मराठी

लेखक :- खुशबू कुमारी / हरिशविद

छपाई :- नवं भारत मिशन प्रार्णिया (

दयावान सामरी

1.

1. ऊ अपन सच में धर्म
ठहरावे के इच्छा से
यीशु से पुछलथीन कि
हमर पड़ौसी के है।

2.

2. यीशु जी कहलथीन ; कि ए
आदमी यरूशलेम से यरीहो के
जा रहलेहल कि डाकुअन हेक
ओकर कपड़वा उतार लेलकैय ;
मार-पीट कै ओकरा अधमरा
छोड़ देलकैय औ चल गेलैय

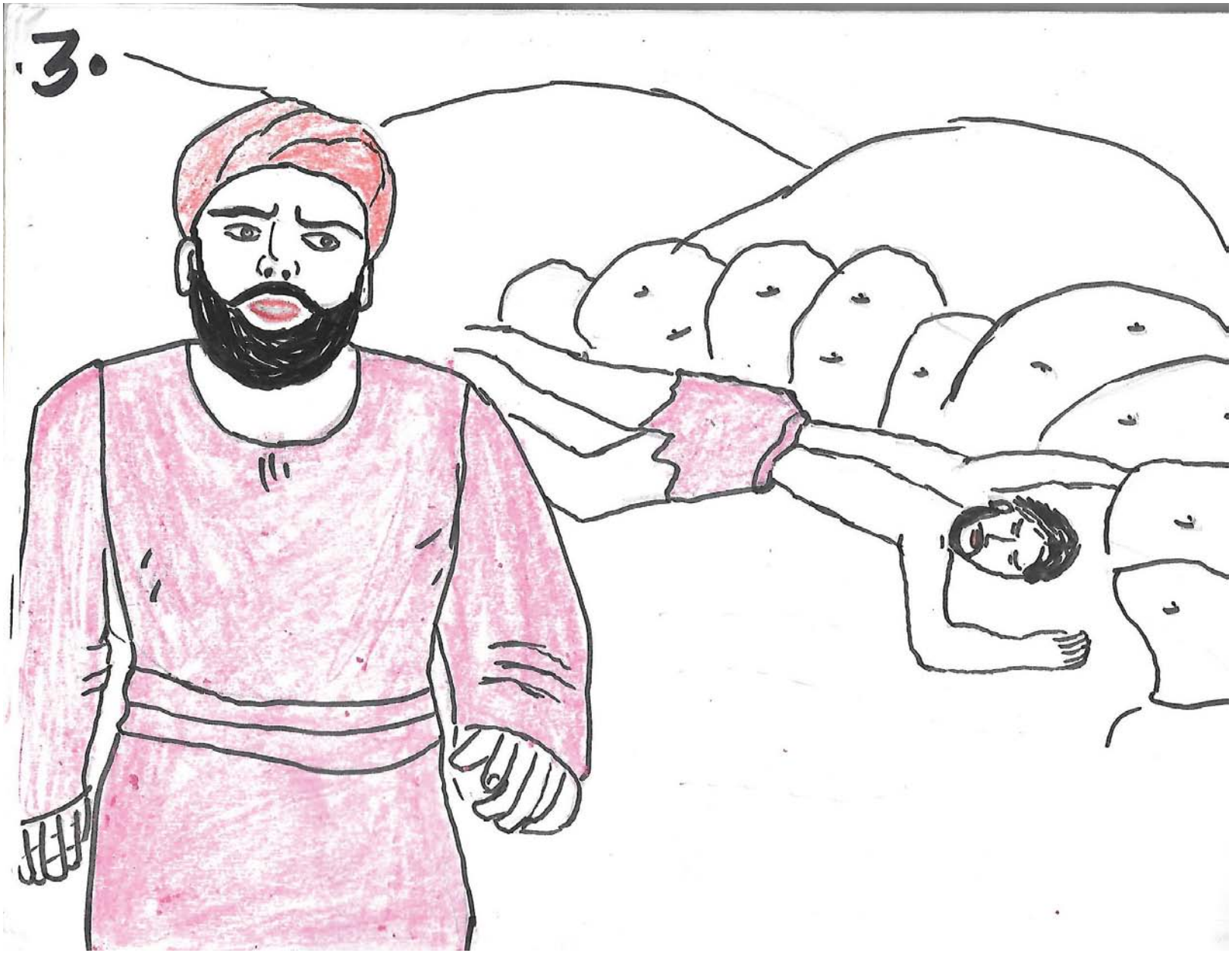
3.

3. औ ऐसन होलैय, कि ओहे
रास्तावा से एगो याजक शहगो
जा रहलेहल औ ओकरा
देख के रस्तावा काट
के चल जेलैय।

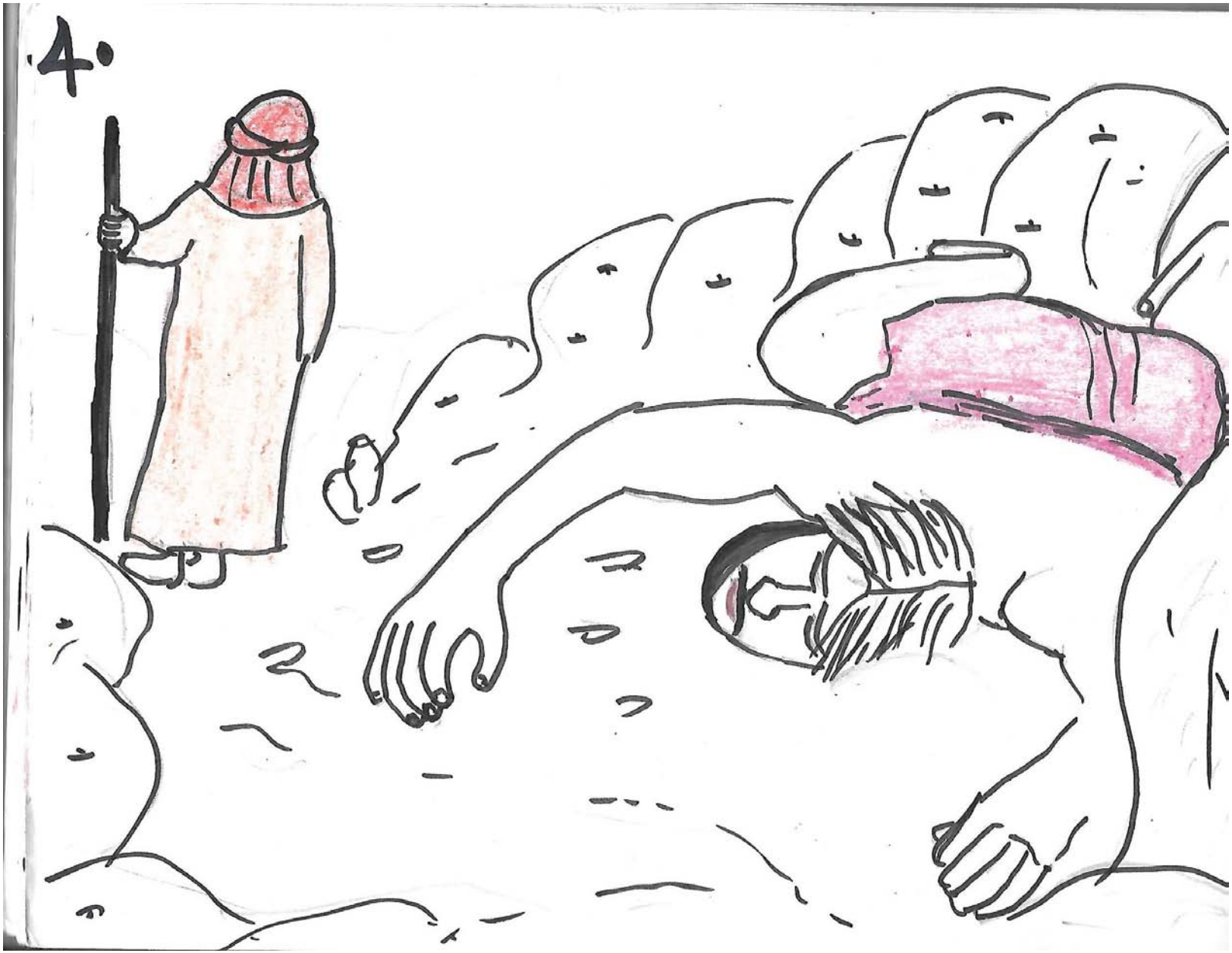
4.

5.

5. लेकिन एगो सामरी मुसाफिर आ गेलैय औ ओकरा देखके बड़ी दया आ गेलैय।

6.

6. औ ओकरा तर जाके ओक
घावा पर तेल औ दाखरस
भोलकैय पटियो बान्ध
देलकैय औ सवारी पर चढ़
के सराय में ले गेलैय औ
ओकर सेवा सत्कार करे लगै

7.

7. दुसर दिन ऊ दु दीनार पैसा निकाल के भटियारे के देल औ कहलकैय कि एकर सेवा सत्कार करोकल औ जे कुछ लं औ लगतैव ऊ हम घुरे पर तोरा दे देबैव ।

8.

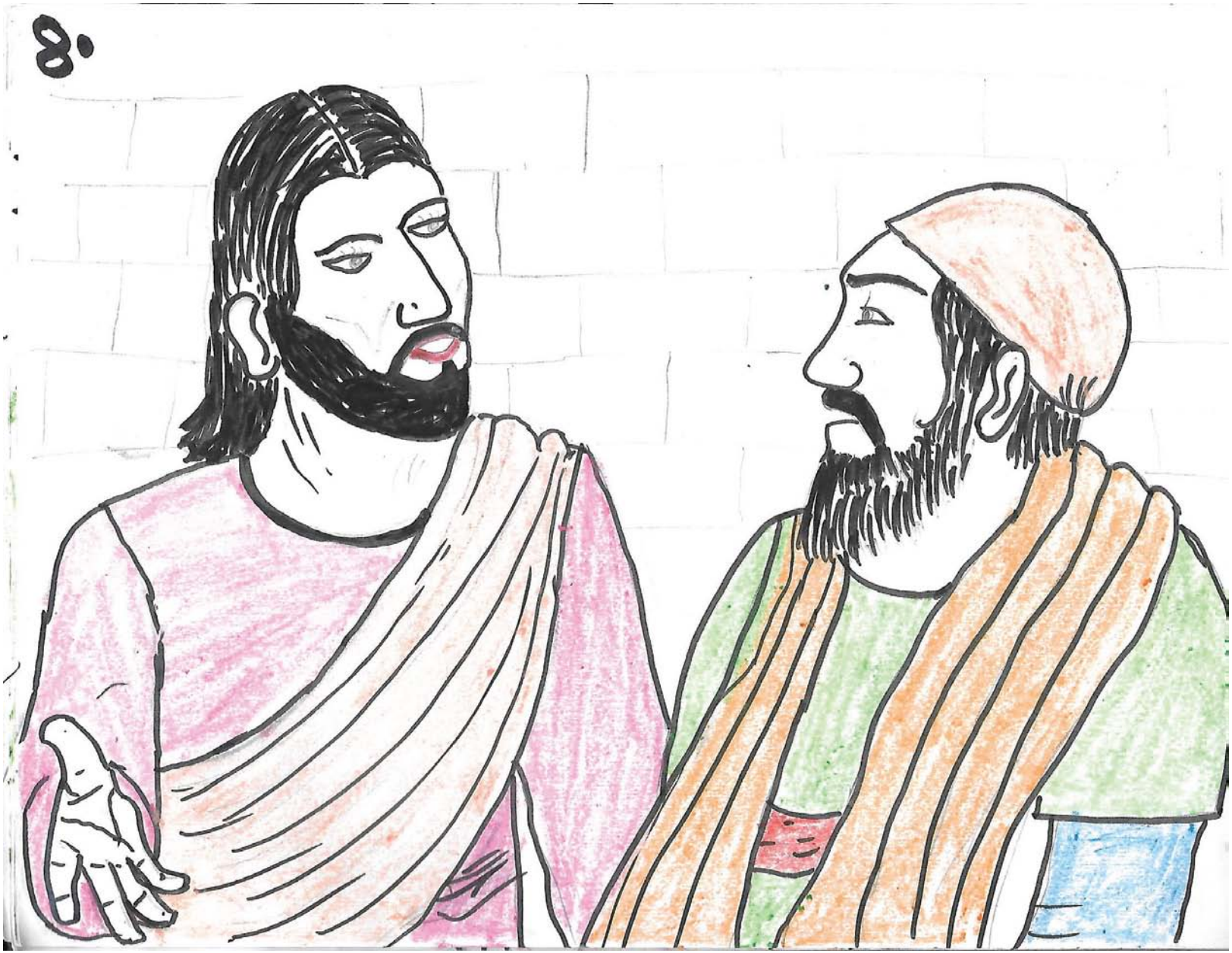

8. औ तोर समझ से जे
डाकुआ से घेराल गेल्हे
ओकरा तीनों में से
ओकर के पड़ोसी बनलै

9.

9. ऊ कहलथीन वो है जे
ओकरा पर दया करलकैय
पीशु ओकरा सें कहलथीन
कि जो तुहुँ वैसहीं करीहें